संपादकीय

भारतीय भाषा दिवस के बहाने

"रंग रंग के रूप हमारे, अलग-अलग है क्यारी-क्यारी
हम सब से मिलकर ही, उपवन की शोभा सारी।"

भारत एक बहुभाषा-भाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय देश है। 1971 की जनगणना के अनुसार भारत में 1652 मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से 33 भाषाएँ प्रमुख मानी गई हैं। इन 33 प्रमुख भाषाओं में संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ उल्लिखित हैं। ये सभी भाषाएँ विभिन्न भाषा-परिवारों के अंर्तगत आती हैं। ये भाषा परिवार एक-दूसरे से संबद्ध और असंबद्ध होते हुए भारत के भाषायी चित्र को पूरा करते हैं। इन विभिन्न भाषा-परिवारों की भाषाओं को बोलने वालों में परस्पर समरसता रही है। एक भाषा-भाषी समुदाय ने दूसरे भाषा-भाषी समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में साथ दिया और आवश्यकता के अनुसार उसकी भाषा को सीखा, अपनाया और उसमें प्रवीणता प्राप्त कर उस भाषा के साहित्य के विकास में सक्रिय सहयोग भी देता रहा। इस प्रकार शताब्दियों के सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया में भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता विकसित होती गई।

जैसा कि विदित है कि भारत विभिन्न सांस्कृतिक, भौगोलिक और भाषायी सामरिकता का संगम है। यहाँ हजारों वर्षों से लोग अपनी भाषाओं में विचार व्यक्त करते रहे हैं। इस विविधता का समर्थन करने के लिए भारत सरकार ने भारतीय भाषा दिवस का आयोजन किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में सुझाया गया है कि "देश के छात्रों को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत कक्षा 6-8 में 'भारत की भाषाएं' विषय पर आयोजित गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इस प्रकार की गतिविधियों में, छात्रों को अधिकांशरूप से प्रमुख भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के बारे में जानने में मदद मिलेगी, जिसके अंतर्गत वे

समान ध्वन्यात्मक और वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित वर्णमाला और लिपियों, उनकी सामान्य व्याकरणिक संरचनाओं, संस्कृत तथा अन्य शास्त्रीय भाषा से इनकी शब्दावली के स्रोत और उद्भव को ढूंढने से लेकर इन भाषाओं की समृद्धी, उसके प्रभाव और अंतरों को समझ सकेंगे। छात्र विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं, जनजातीय भाषाओं की प्रकृति और संरचना, भारत की हर प्रमुख भाषा में कुछ पदों व पंक्तियों तथा प्रत्येक भाषा के समृद्ध और उभरते साहित्य के बारे में भी सीख पाएंगे। इस प्रकार की गतिविधियां उन्हें भारत की एकता, सुंदर सांस्कृतिक विरासत तथा इसकी विविधता की भावना से ओतप्रोत करेगी और अपने पूरे जीवन भर वे भारत के अन्य हिस्सों के लोगों से मिलने-जुलने में सहजता महसूस करेंगे।"

आज समय की माँग है कि अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अधिक से अधिक भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए, अनुकूल वातावरण बनाने तथा भारतीय भाषाओं के प्रति प्रेम निर्माण करने के लिए 'भाषाई सौहार्द' विकसित करने की आवश्यकता है। किसी अन्य भारतीय भाषा को सीखना या बोलना हमारी प्रतिष्ठा का विषय होना चाहिए। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने सुब्रह्मण्यम भारती की जन्म जयंती 11 दिसंबर को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। इस वर्ष यह दिन भारतीय भाषा उत्सव के रूप में मनाया गया। सुब्रह्मण्यम भारती के जन्म जयंती पर ही भारतीय भाषा उत्सव क्यों मनाया जाय तो इसका कारण है कि महाकवि चिन्नास्वामी सुब्रमण्यम भारती अपने समय में उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु माने जाते थे। उनकी जयंति को भारतीय भाषा उत्सव दिवस के रूप में मनाना एक बार फिर राष्ट्रीय एकता के भाव को मजबूत करेगा।

भारतीय भाषा दिवस मनाने का उद्देश्य मुख्यतः लोगों को भारतीय भाषाओं के बारे में जानकारी देना। लोगों को कुछ और भारतीय भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित करना। भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, सद्भाव और अखंडता का अनुभव कराना रहा है। यह भी बताना है कि भाषा सीखना कैसे एक मनोरंजक और आनंददायी अनुभव हो सकता है। राष्ट्र के विकास और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के लक्ष्य को साकार करने के लिए भारतीय भाषाओं की आवश्यकता को रेखांकित किया जा सकता है।

भारतीय भाषा दिवस एक महत्वपूर्ण उत्सव है जो हमें याद दिलाता है कि हमारी भाषाएं हमारे समृद्धि और एकता के लिए कैसे महत्वपूर्ण हैं। इस दिनाचरण के माध्यम से, हम सभी को भाषाओं के महत्व को समझने और समर्थन करने का एक शानदार अवसर मिलता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हर भाषा अपना महत्व रखती है। भारतीय भाषा उत्सव एक सांस्कृतिक समर्थन का माध्यम है जो भाषाओं के समृद्धि में मदद करता है और भाषाओं की सांस्कृतिक विविधता को समझाने का मौका प्रदान करता है।

हमारी पत्रिका आखर का भी यही एक उद्धेश्य हिंदी के साथ साथ भारत की विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ सौहार्द की भावना को विकसित किया जाय।

'आखर' के इस अंक में शोधालेखों के साथ साथ कविता, पुस्तक समीक्षा तथा लेख शामिल है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते!

प्रधान संपादिका
प्रतिभा मुदलियार

****